Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

छत्तीसगढ़ी भाषा

जय जोहार छत्तीसगढ़

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CGPM16

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

छत्तीसगढ़ी भाषा

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

CGPCS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**छत्तीसगढ़ी भाषा का ज्ञान एवं छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग**	**5–12**
	1.1 छत्तीसगढ़ी भाषा का सामान्य परिचय	5
	1.2 छत्तीसगढ़ के भाषा-परिवार	7
	1.3 छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग	8
2.	**छत्तीसगढ़ी भाषा का साहित्य एवं प्रमुख साहित्यकार**	**13–34**
	2.1 छत्तीसगढ़ी साहित्य का काल-विभाजन	13
	2.2 छत्तीसगढ़ में हिन्दी साहित्य	16
	2.3 छत्तीसगढ़ी गद्य का विकास	19
	2.4 छत्तीसगढ़ी के प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी रचनाएँ	21
3.	**छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य**	**35–70**
	3.1 लोकोत्तिया	35
	3.2 कहावत (हाना)	35
	3.3 छत्तीसगढ़ी मुहावरें	44
	3.4 छत्तीसगढ़ी पहेलियाँ (जनउला)	59
	3.5 छत्तीसगढ़ी लोकगीत एवं लोकनाट्य	64
4.	**छत्तीसगढ़ी व्याकरण**	**71–126**
	4.1 शब्द साधन	71
	4.2 संज्ञा	72
	4.3 सर्वनाम	77
	4.4 विशेषण	82
	4.5 क्रिया	88
	4.6 वाच्य	94
	4.7 तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज व संकर शब्द	96
	4.8 अव्यय (अविकारी शब्द)	105
	4.9 कारक	113

4.10 काल 117
4.11 लिंग 120
4.12 वचन 122
5. शब्द-रचना (उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास) 127–156
5.1 उपसर्ग 127
5.2 प्रत्यय 130
5.3 संधि 135
5.4 समास 150
6. लोकव्यवहार में छत्तीसगढ़ी शब्द 157–223
6.1 छत्तीसगढ़ी शब्दकोश 157
6.2 अखिल भारतीय प्रशासनिक शब्दकोष हेतु छत्तीसगढ़ी शब्द 195
6.3 छत्तीसगढ़ी-हिंदी-संस्कृत-अंग्रेजी में संख्याएँ 208
6.4 लोकव्यवहार में प्रयोग होने वाले महत्त्वपूर्ण शब्दावली 212
6.5 विलोम शब्द 217
7. छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास में समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, आकाशवाणी व सिनेमा की भूमिका 224–232
7.1 छत्तीसगढ़ी के विकास में समाचार-पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका 224
7.2 समन्वित साहित्यिक रेडियो पत्रिका (छत्तीसगढ़ी) 'मोर भुइयाँ' 227
7.3 छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास में छत्तीसगढ़ी सिनेमा की भूमिका 228

अध्याय
1

छत्तीसगढ़ी भाषा का ज्ञान एवं छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग (Knowledge of Chhattisgarhi Language & Chhattisgarh Rajbhasha Aayog)

पुरातन समय से ही छत्तीसगढ़ (दक्षिण-कोसल) विभिन्न संस्कृतियों का मिलन-स्थल रहा है। यहाँ भिन्न-भिन्न धर्म, भाषाएँ/बोलियाँ विकसित हुईं एवं वर्तमान में भी यह अपनी विविधता को सँजोए हुए है। छत्तीसगढ़ की इस भाषायी विविध ता को देखते हुए यहाँ के भाषाविदों ने छत्तीसगढ़ को एक 'भाषायी क्षेत्र' की संज्ञा दी है। वर्तमान में यहाँ लगभग 93 भाषाएँ/बोलियाँ बोली जाती हैं।

1.1 छत्तीसगढ़ी भाषा का सामान्य परिचय

छत्तीसगढ़ी भाषा का विकास एवं इतिहास

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा 'वैदिक संस्कृत' के लिखित साहित्य की शुरुआत को भाषाविदों ने 1500 ई.पू. माना है। हमारे समस्त पौराणिक ग्रंथ वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, रामायण एवं महाभारत आदि प्रारंभ में इसी 'वैदिक संस्कृत' और 'लौकिक संस्कृत' (ब्राह्मी लिपि) में लिखे गए थे। वैदिक संस्कृत को देवताओं की भाषा भी माना गया है। वस्तुतः यह पंडितों/विद्वानों की ही भाषा रही है। लगभग 2000 साल की विकास-यात्रा में वैदिक संस्कृत का स्वरूप बदलता गया और क्रमशः लौकिक संस्कृत, प्रथम प्राकृत (पालि), द्वितीय प्राकृत से होते हुए तृतीय प्राकृत तक पहुँची। इसी तृतीय प्राकृत को ही 'अपभ्रंश' कहा गया जिसका प्रारंभ बिंदु 500 ई. माना गया है।

इसी अपभ्रंश से ही प्रमुख भारतीय भाषाओं हिन्दी, उड़िया, बांग्ला, गुजराती, असमिया, मैथिली, पंजाबी, सिंधी, मराठी आदि की उत्पत्ति मानी गई है। भाषाशास्त्रियों ने 'छत्तीसगढ़ी' को पूर्वी हिन्दी की एक शाखा माना है। इस प्रकार 'छत्तीसगढ़ी' का विकास अन्य आधुनिक भाषाओं की भाँति प्राचीन आर्य भाषा (संस्कृत) से हुआ है। विकासक्रम में 'अपभ्रंश' से 'अर्द्धमागधी', अर्द्धमागधी से पूर्वी हिन्दी की उपभाषाओं अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी का विकास हुआ है। 'मागधी' और 'शौरसेनी' के बीच का क्षेत्र 'अर्द्धमागधी' का है इसलिये 'अर्द्धमागधी' में 'मागधी' एवं 'शौरसेनी' दोनों की विशेषताएँ पाई जाती हैं किंतु ज़्यादा प्रभाव 'मागधी' का ही है। छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिन्दी की तीन शाखाओं में से एक है। अन्य दो शाखाएँ बघेली और अवधी हैं। इन दोनों को छत्तीसगढ़ी की दो भगिनियाँ कहा जाता है।

छत्तीसगढ़ी भाषा का विकास प्राचीन आर्यभाषा अर्थात् संस्कृत से हुआ है, जो विकासक्रम में 'अपभ्रंश' से होते हुए 'अर्द्धमागधी' तक पहुँची। इसी 'अर्द्धमागधी' से छत्तीसगढ़ी भाषा का विकास हुआ है। यह छत्तीसगढ़ के दो करोड़ से ज़्यादा लोगों की संपर्क भाषा है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ी को प्रदेश की राजभाषा घोषित किया गया है और इसके विकास एवं निरंतरता को बनाए रखने के लिये एक राजभाषा आयोग का गठन किया गया है।,

छत्तीसगढ़ी की उत्पत्ति का विकासक्रमः प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (वैदिक संस्कृत 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू., **लौकिक संस्कृत** 1000 ई.पू. से 500 ई.पू.) → **मध्यकालीन आर्य भाषा (प्रथम प्राकृत/पालि** 500 ई.पू. से 1 ली ई. तक, **द्वितीय प्राकृत** 1 ली ई. से 500 ई. तक, **तृतीय प्राकृत/अपभ्रंश** 500 ई. से 1000 ई. एवं **अवहट्ट** 900 ई. से 1100 ई. तक)

छत्तीसगढ़ी का विकासक्रम							
वैदिक संस्कृत	→	लौकिक संस्कृत	→	पालि	→	प्राकृत	
अपभ्रंश	→	अर्द्धमागधी	→	पूर्वी हिन्दी	→	छत्तीसगढ़ी	

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग की प्रथम कार्यकारी बैठक 14 अगस्त, 2008 को हुई थी इसलिये इस दिन को छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का 'कार्यालय स्थापना दिवस' के रूप में मनाते हैं।
- छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष पं. श्यामलाल चतुर्वेदी थे।
- 'बिजहा कार्यक्रम' छत्तीसगढ़ के लुप्त होते शब्दों को संगृहीत करने का कार्यक्रम है।
- छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का प्रथम प्रांतीय सम्मेलन फरवरी 2013 में हुआ था जबकि वर्तमान (सप्तम) सम्मेलन मार्च 2019 में रायपुर में हुआ।
- बघेली और अवधी छत्तीसगढ़ी की दो भगिनियाँ हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से कौन बस्तर अंचल की बोली नहीं है?
CGPCS (Pre) 2018
(a) गोंडी (b) हल्बी
(c) भतरी (d) सदरी

2. 'हल्बी' किस भाषा-परिवार से है?
CGPCS (Pre) 2018
(a) आर्य (b) द्रविड़
(c) मुंडारी (d) इनमें से कोई नहीं

3. छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस की तिथि बतलाइये-
CGPCS (Pre) 2018
(a) 28 नवंबर (b) 14 अगस्त
(c) 21 फरवरी (d) 14 सितंबर

4. 'कुडुख' बोली कौन बोलते हैं?
CGPCS (Pre) 2017
(a) कमार (b) कोल
(c) उराँव (d) गोंड
(e) इनमें से कोई नहीं

5. छत्तीसगढ़ की प्राचीन भाषा का नाम क्या था?
CGPCS (Pre) 2016
(a) हल्बी (b) अवधी
(c) कोसली (d) महाकान्तरीए
(e) इनमें से कोई नहीं

6. भारतीय आर्य भाषाओं का विकास किस भाषा से हआ है?
CGPCS (Pre) 2015
(a) मागधी (b) पालि
(c) अपभ्रंश (d) शौरसेनी
(e) महाराष्ट्री

7. हीरालाल शुक्ल ने छत्तीसगढ़ के भाषा-परिवारों को कितने रूपों में बाँटा है?
(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) इनमें से कोई नहीं

8. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का गठन हुआ था-
(a) अगस्त 2007 में (b) अगस्त 2008 में
(c) सितंबर 2009 में (d) अगस्त 2009 में

9. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष हैं-
(a) श्री दानेश्वर शर्मा
(b) डॉ. विनोद कुमार वर्मा
(c) पं. श्यामलाल चतुर्वेदी
(d) डॉ. विनय कुमार पाठक

10. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का प्रथम प्रांतीय सम्मेलन कहाँ हुआ था?
(a) राजिम में (b) बिलासपुर में
(c) कोरबा में (d) भिलाई में

11. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का षष्ठम प्रांतीय सम्मेलन किसको समर्पित था?
(a) डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा को
(b) स्व. संत कवि पवन दीवान को
(c) स्व. डॉ. विमल कुमार पाठक को
(d) पं. श्यामलाल चतुर्वेदी को

12. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का सप्तम अधिवेशन (सम्मेलन) कब आयोजित हुआ?
(a) जनवरी 2019 में (b) फरवरी 2019 में
(c) मार्च 2019 में (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (d) 2. (a) 3. (a) 4. (c) 5. (c) 6. (c) 7. (b) 8. (b) 9. (c) 10. (d)
11. (c) 12. (c)

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पूर्वी हिन्दी की समर्थ विभाषा छत्तीसगढ़ी की दो भगिनियाँ कौन-कौन सी हैं? **CGPCS (Mains) 2018**
2. 19 से 21 जनवरी, 2018 को बेमेतरा में आयोजित छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का षष्ठ प्रांतीय अधिवेशन (सम्मेलन) किस साहित्यकार को समर्पित था? **CGPCS (Mains) 2018**
3. आठवीं अनुसूची में छत्तीसगढ़ी को सम्मिलित कराने से क्या-क्या लाभ होंगे? **CGPCS (Mains) 2018, 2015**
4. छत्तीसगढ़ी की उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की बोली का नाम बताइये। **CGPCS (Mains) 2017**
5. छत्तीसगढ़ में बोली जाने वाली द्रविड़ भाषा-परिवार की एक बोली/भाषा का नाम बताइये। **CGPCS (Mains) 2017**
6. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का कार्यालय स्थापना दिवस किस तारीख को मनाया जाता है? **CGPCS (Mains) 2017**
7. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का पाँचवा प्रांतीय सम्मेलन सन् 2017 में कहाँ हुआ था? **CGPCS (Mains) 2017**
8. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का 'बिजहा' कार्यक्रम क्या है? **CGPCS (Mains) 2017**
9. छत्तीसगढ़ी की एक पूर्वी उपबोली का नाम बताइये। **CGPCS (Mains) 2016**
10. 'उराँव' किस भाषा-परिवार से संबंधित है? **CGPCS (Mains) 2016**
11. छत्तीसगढ़ी की भाषायी विविधता का कारण क्या है? **CGPCS (Mains) 2016**
12. छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस कब मनाया जाता है? **CGPCS (Mains) 2016, 2012**
13. छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के तीन अध्यक्षों का कालक्रमानुसार नामोल्लेख कीजिये। **CGPCS (Mains) 2016**
14. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग द्वारा संचालित 'माई कोठी योजना' क्या है? **CGPCS (Mains) 2016**
15. छत्तीसगढ़ी बोली है या भाषा? **CGPCS (Mains) 2015**
16. छत्तीसगढ़ी के मानकीकरण पर आपके विचार। **CGPCS (Mains) 2015**
17. प्राथमिक कक्षा में छत्तीसगढ़ी माध्यम से अध्यापन का औचित्य। **CGPCS (Mains) 2015**
18. छत्तीसगढ़ी की उत्पत्ति किस अपभ्रंश से हुई है? **CGPCS (Mains) 2014**
19. ओड़िया प्रभावित छत्तीसगढ़ी को किस नाम से जाना जाता है? **CGPCS (Mains) 2014**
20. छत्तीसगढ़ी में कुल कितने स्वर हैं? **CGPCS (Mains) 2014**
21. छत्तीसगढ़ी पर पार्श्ववर्ती भाषाओं/बोलियों का प्रभाव। **CGPCS (Mains) 2013**
22. राजभाषा छत्तीसगढ़ी पर अपने विचार व्यक्त कीजिये। **CGPCS (Mains) 2013**
23. पूर्वी हिन्दी छत्तीसगढ़ी के साथ कौन-सी दो बोलियाँ सम्मिलित हैं? **CGPCS (Mains) 2012**
24. छत्तीसगढ़ी के भाषा-परिवार को कितने वर्गों में बाँटा गया है?
25. 'कोरकू' किस भाषा-परिवार से संबंधित है?
26. छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग का सातवाँ प्रांतीय सम्मेलन सन् 2019 में कहाँ हुआ था?

अध्याय
2

छत्तीसगढ़ी भाषा का साहित्य एवं प्रमुख साहित्यकार (Literature of Chhattisgarhi Language and Prominent Litterateur)

शब्दों और भावों का संचय साहित्य कहलाता है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य द्वारा अपने विचारों और भावनाओं को किसी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने का मूर्त रूप (रचना) साहित्य कहलाता है।

छत्तीसगढ़ी भाषा में जो काव्य-रचना की गई उसे छत्तीसगढ़ी काव्य कहते हैं, क्योंकि आरंभिक रूप में छत्तीसगढ़ी कोई स्वतंत्र भाषा नहीं थी इसलिये इस भाषा में स्वतंत्र काव्य-रचना के उदाहरण बहुत ही नगण्य हैं, जो कुछ साहित्य के रूप में प्राप्य है उसमें ज़्यादातर यहाँ की लोक-संस्कृति में प्रचलित कथाएँ, कहानियाँ और धार्मिक तथा पौराणिक उपदेश हैं जो सदियों से लोक-जीवन का हिस्सा रहे हैं।

इसलिये मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि 20वीं सदी के आरंभ से पूर्व तक छत्तीसगढ़ी साहित्य का संबंध छत्तीसगढ़ी भाषा से ज़्यादा छत्तीसगढ़ की आंचलिकता से रहा है। जबकि, 20वीं सदी के आरंभ में जब छत्तीसगढ़ी साहित्य में आधुनिक काल की शुरुआत होती है और छत्तीसगढ़ी एक स्वतंत्र भाषा बनने की तरफ तेज़ कदम बढ़ाने लगती है, छत्तीसगढ़ी साहित्य अपने आपमें नवीन विषयों को समेटने लगता है।

2.1 छत्तीसगढ़ी साहित्य का काल-विभाजन

प्रत्येक भाषा के साहित्य में लेखन की परंपरा पद्यात्मक लेखन से आरंभ हुई है। छत्तीसगढ़ी में भी साहित्यिक लेखन की परंपरा पद्य से ही आरंभ हुई है। कबीर के शिष्य धनी धर्मदास को डॉ. नरेंद्र देव वर्मा छत्तीसगढ़ी का आदि कवि निरूपित करते हैं। इनके बाद के कवियों में सारंगढ़ के प्रह्लाद दुबे की रचना 'जय चंद्रिका' में भी ब्रज, बैसवाड़ी और छत्तीसगढ़ी का पुट मिलता है।

डॉ. नरेंद्रदेव वर्मा के अनुसार, छत्तीसगढ़ी अर्द्धमागधी की दुहिता (पुत्री) एवं अवधी की सहोदरा (सगी बहन) है। छत्तीसगढ़ी और अवधी दोनों का जन्म अर्द्धमागधी से आज से लगभग 12 सौ वर्ष पूर्व 9-10वीं शताब्दी में हुआ था। भाषा और साहित्य परस्पर अंतरावलंबी एवं सहगामिनी होती हैं। छत्तीसगढ़ी साहित्य का विकास अतीत में स्पष्ट नहीं है। इसका कारण यह नहीं है कि छत्तीसगढ़ साहित्य सृजन की दृष्टि से अनुर्वर रहा है अपितु यह तो महान साहित्य-स्रष्टाओं की भूमि रही है। संस्कृत भाषा की अधिक प्रतिष्ठा के कारण यहाँ के साहित्यकारों ने संस्कृत में ही अपनी अभिव्यक्ति की और छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रति उदासीन रह गए। छत्तीसगढ़ी में रचित साहित्य की परंपरा का आरंभ लगभग 1000 वर्ष से अधिक हो चुका है। छत्तीसगढ़ी साहित्यिक परंपरा के विभिन्न युगों की विशिष्ट प्रवृत्तियों के अनुरूप इसको निम्नत: विभाजित किया जा सकता है-

(i) गाथायुग या आदिकाल (ii) भक्तियुग या मध्यकाल (iii) आधुनिक काल

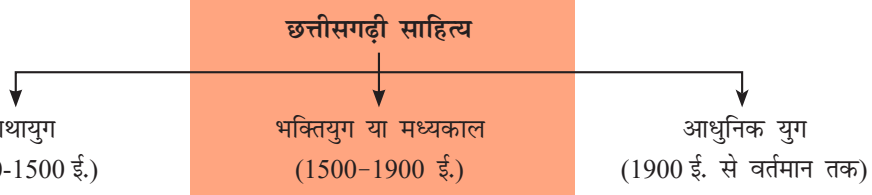

गाथायुग (1000-1500 ई.)

इस काल को वीरगाथाकाल, चारणकाल या आदिकाल के नाम से भी जाना जाता है। छत्तीसगढ़ी साहित्य के इतिहास की दृष्टि से इसे स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में हिन्दी साहित्य की परंपरा के अनुरूप छत्तीसगढ़ी में युद्ध अभियान, वीरता और प्रेम को चित्रित करने वाली गाथाओं (काव्यों) की रचना हुई।

ये गाथाएँ मौखिक रूप से चली आ रही हैं। इनकी कोई लिपिबद्ध परंपरा नहीं है। इस युग के काव्यों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

अध्याय
3

छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य
(Chhattisgarhi Folk Literature)

3.1 लोकोक्तियाँ

ऐसे छोटे-छोटे मार्मिक कथन जिनमें लोक-जीवन के निरीक्षण, अनुशीलन व अनुभव का सार निहित होता है, लोकोक्तियाँ कहलाती है। सच्चाई, ईमानदारी और सूक्ष्म अनुभव इनकी आधारशीला है। लोकजीवन की सूक्ष्म दृष्टि लोक बुद्धि की गहराई और लोक वार्ता की शक्ति लोकोक्ति से प्रगट होती है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकोक्तियों को 'मानवी ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र' कहा है।

लोकोक्तियाँ तो साहित्य की आत्मा हैं। यह लोक जीवन से उत्पन्न होती व विस्तार पाती है। इसमें समाज की आर्थिक सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक व्यवस्था का जीवंत चित्रण होता है। सरल शब्दों में कहें तो जीवित रहने के लिए श्वाँस की जितनी आवश्यकता होती है उनती ही आवश्यकता व महत्त्व भाषा के जीवित रहने के लिए लोकोक्तियाँ जीवंत भाषा की श्वाँसें हैं।

वस्तुत: लोकोक्ति सार्वभौम साहित्य है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति में स्थानीय रंग भरपूर है। लोकोक्तियाँ सुभाषित नहीं हैं। वे जनमानस की उक्तियाँ हैं, पंडितों की वाणी नहीं।

रूप की दृष्टि से लोकोक्ति के तीन भेद किए गए हैं-

(i) कहावत (हाना) (ii) मुहावरा (iii) जनउला

3.2 कहावत (हाना)

कहावत को विश्व की नीति-साहित्य का अंग माना गया है। कहावत अपने आप में पूर्ण वाक्य होता है- जैसे- 'अक्षर म कनवा राजा'। कहावतों का स्वतंत्र प्रयोग होता है। कहावतों का उद्देश्य खंडन मंडन या तर्क द्वारा किसी बात को साबित करना या विरोध करना है। काल, वचन और पुरूष के नुसार इसमें परिवर्तन नहीं होता। छत्तीसगढ़ी में कहावत के लिए 'हाना' शब्द प्रचलित है। इसक अर्थ भी कहना या कथन है।

छत्तीसगढ़ी हाना	हिन्दी अर्थ
अटकर पेंच, साढ़े बारह।	अनुमान का हिसाब-किताब बेकार होता है।
अड़हा के लेखे रड़हे डड़हा।	अनपढ़ के लिए सब अक्षर समान होता है।
आदमी में नउवा अऊ चिरई में कउवा।	इंसानों में नाई और पक्षियों में कौंवा चतुर होते हैं।
अपन मरय बिन सरग नइ दिखय।	महत्त्वपूर्ण कार्य स्वयं करे बिना नहीं होते।
अपने टेंटा ल देखय नहीं आन के फूलों ल हासथय।	स्वयं की गलती नहीं देखना और दूसरों पर हँसना।
बाप के बानी पठान के घोड़ा, बहुत नहीं-थोड़ा-थोड़ा।	मनुष्य और पशुओं में थोड़ा बहुत खानदानी स्वभाव होता है
बुटकी गाय सदा कलुराय।	बौनी गाय सदा जवान दिखती है।
बढ़ई के डउकी भुंइया म सुतय।	सुविधा होने पर भी अभाव में रहना।
धान अउ बाम्हन के एके हाल।	धान और ब्राह्मण में अनेक भेद होते हैं।
उल्टा-पुल्टा भए संसार, नाऊ के मुंड ल मूंडे लुहार।	जमाना बदलना।
ठलहा बनिया का करय! ए कोठी के धान ल ओ कोठी मा करय।	निठल्ला अनावश्यक कार्य में लगा रहता है।

अध्याय
4

छत्तीसगढ़ी व्याकरण
(Chhattisgarhi Grammar)

4.1 शब्द साधन

शब्द, एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि होती है। शब्दों के भेद तथा उनके प्रयोग, रूपांतर और व्युत्पत्ति का निरूपण, शब्द साधन कहलाता है।

शब्दों के भेद

शब्दों को मुख्यत: पाँच श्रेणियों में बाँटा जा सकता है-

- वाक्य प्रयोग के आधार पर
- रूपांतर के आधार पर
- व्युत्पत्ति के आधार पर
- अर्थ के आधार पर
- उद्‌गम के आधार पर

वाक्य प्रयोग के आधार पर

वाक्य प्रयोग के अनुसार शब्दों के आठ भेद होते हैं-

(i) संज्ञा (ii) क्रिया (iii) विशेषण (iv) क्रिया विशेषण (v) सर्वनाम (vi) संबंध सूचक (vii) समुच्चयबोधक (viii) विस्मयादिबोधक

उदाहरण: "अरे! सुरुज बूड़ गइस अउ तैं अभीच ले एही गांव के पासे घुमत हस।"

(अरे! सूरज डूब गया और तुम अभी तक इसी गाँव के पास ही घूम रहे हो।)

इस वाक्य में 'सुरुज' (सूरज) **संज्ञा** है जो एक वस्तु का नाम सूचित करता है। 'बूड़ गइस' (डूब गया) **क्रिया** है, जिसके द्वारा हम सूरज के बारे में विधान करते हैं। 'अउ' (और) **समुच्चय बोधक** है। 'तैं' (तुम) **सर्वनाम** है जो कर्त्ता (नाम) के बदले में प्रयुक्त हुआ है। 'अभीच ले' (अभी तक) **क्रिया-विशेषण** है। 'एही' (इसी) **विशेषण** है जो गाँव की विशेषता बता रहा है। 'पासे' (पास ही) **संबंध सूचक** है जो 'गाँव' का संबंध घुमत हस (घूम रहे हो) क्रिया से बताता है। 'घुमत हस' (घूम रहे हो) **क्रिया** है। '!' विस्मयादि बोधक शब्द (चिह्न) है।

रूपांतर के आधार पर

इस आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं- (i) विकारी शब्द (ii) अविकारी शब्द

विकारी शब्द, वे शब्द होते हैं जिनमें विकार (परिवर्तन) होता है। जैसे-टूरा (लड़का), टूरा-मन (लड़के), टूरेच (लड़कों), टूरी (लड़की), टूरी-मन (लड़कियाँ), टूरीज (लड़कियों) आदि।

अविकारी शब्द, वे शब्द होते हैं जिनमें विकार (परिवर्तन) नहीं होता। जैसे-परंतु, किंतु, अउ, या, बिना आदि।

व्युत्पत्ति के आधार पर

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन भेद होते हैं-

(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द, वे शब्द होते हैं जो किसी दूसरे शब्दों के योग से नहीं बनते बल्कि इनका स्वतंत्र अस्तित्व होता है। जैसे-नाक, कान, हरा, पीला, झट आदि।

अध्याय
5

शब्द-रचना (उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास)
[Word Form (Prefix, Suffix, Sandhi, and Samas)]

शब्द रचना से तात्पर्य शब्दों के निर्माण से है। हिन्दी व्याकरण की तरह छत्तीसगढ़ में भी शब्द-रचना की चार विधियाँ हैं-

1. उपसर्ग के योग से 2. प्रत्यय के योग से 3. संधि द्वारा और 4. समास द्वारा

5.1 उपसर्ग

जो शब्द किसी अन्य शब्द के पहले जुड़कर एक नया सार्थक शब्द बनाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे- 'बल' एक शब्द है जिसका अर्थ है- शक्ति या ताकत। 'बल' के पहले 'निर' या 'स' लगाने से दो नए सार्थक शब्द बनते हैं-

निर + बल = निर्बल (जिसका अर्थ है बलहीन)

स + बल = सबल (जिसका अर्थ है बलवान)

उपसर्ग किसी शब्द के साथ जुड़कर निम्नलिखित परिवर्तन लाते हैं-

1. ये शब्द के अर्थ को बदल देते हैं और नवीन विशेषता ला देते हैं, जैसे- 'गमन' एक शब्द है जिसका अर्थ होता है- 'जाना'। यदि इसमें 'अनु' उपसर्ग लगा दिया जाए तो वह शब्द परिवर्तित होकर 'अनुगमन' बन जाता है जिसका अर्थ 'जाना' न होकर 'पीछे जाना' या 'पीछे चलना' हो जाता है। इस प्रकार उपसर्ग के जुड़ने से मूल शब्द का अर्थ बदल जाता है।
2. उपसर्ग मूल शब्द के अर्थ को उलट देते हैं, जैसे- 'मेल' शब्छ का अर्थ होता है- मिलना। जब इस शब्द में 'अन' उपसर्ग लगा देते हैं तो यह मूल शब्द के अर्थ को उल्टा कर देता है। अर्थात् 'अनमेल' = न मिलना।
3. कभी-कभी उपसर्ग किसी मूल शब्द के अर्थ में मौलिक परिवर्तन नहीं करता है, जैसे- 'पुत्र' शब्द में 'सु' उपसर्ग लगाने पर यह 'सुपुत्र' बन जाता है। यहाँ पुत्र एवं सुपुत्र दोनों का अर्थ एक ही है। हालाँकि बोल चाल में पुत्र' बेटे को दर्शाता है जबकि 'सुपुत्र' एक अच्छे बेटे के लिये संबोधित किया जाता है।

छत्तीसगढ़ में चार प्रकार के उपसर्ग मिलते हैं-

(i) संस्कृत के उपसर्ग
(ii) हिन्दी के उपसर्ग
(iii) विदेशज उपसर्ग
(iv) छत्तीसगढ़ी के स्वतंत्र उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग

हिन्दी के समान

छत्तीसगढ़ी भाषा में भी संस्कृत से आए उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है। इनकी संख्या 19 मानी गई है-

संस्कृत के उपसर्ग

क्रम संख्या	उपसर्ग	प्रयोग
1	अति	अतिनिद्र, अतिरिक्त
2	अधि	अधिकार, अधिभार
3	अनु	अनुभव, अनुवाद, अनुचर अनुशासन
4	अप	अपमान, अपजस, अपवाद, अपशब्द

अध्याय
6

लोकव्यवहार में छत्तीसगढ़ी शब्द
(Chhattisgarhi Words in Public Practice)

6.1 छत्तीसगढ़ी शब्दकोश

छत्तीसगढ़ी शब्द	हिन्दी अर्थ	अंग्रेज़ी अर्थ	छत्तीसगढ़ी शब्द	हिन्दी अर्थ	अंग्रेज़ी अर्थ
अइसन	ऐसा	Such, like	अगास	आकाश	Sky
अउंकना	बीमार पड़ना	To be ill	अगमजानी	भविष्यवक्ता	Prophet, Seer
अउठ	साढ़े तीन	Three and a half	अगलउता	इकलौता	Only, begotton
अउर	और	And	अगाड़ी	आगे	Front
अऊ	अधिक, और	More	अग्घन	अगहन	A month
अंगठी, अंगरी	उँगली	Finger	अगियाना	जलना, दर्द होना	To burn, to pain
अगना	आंगन	Courtyard	अगीती	सामने	Front
अंगरखा	अंगरखा	Cout	अगोरना	बाट जोहना	To wait
अंगरा	अंगारा	Burning Coal	अघाद	अधिक, अति	More
अंगसी-संगसी	गली	Small Street	अघाना	तृप्त होना	To be satisfied
अंगठा	अंगूठा	Thumb, Toe	अघुवा	अगुआ	Leader
अंगेठा	आग धूनी	Fire	अघुवाना	अगुआई करना	To lead
अंगोछी	अंगोछा	Towel	अघोरी	अघोरी	Filthy eater
अंगोछना	पोंछना	To wipe	अचरूज	अचरज	Wonderful
अंजोर	उजाला	Light	अंचस	आँचल	Lap
अंडी	अरण्डी	Castor Seed	अचोना	हाथ धोना	To wash hands
अंधाधुन्द	अंधाधुंध	Indiscriminate	अजगर	अजगर	Python
अंधियारा	अंधेरा, अंधकार	Dark	अजम	पक्का	Correct
अंधवा	अंधा	Blind	अजार	रोग	Disease
अकतियार	इख्तियार, अधिकार	Authority	अटकना	अटकना, अड़चन	To be kept back
अकल	अक्ल, बुद्धि	Wisdom	अटपट	अटपट में होना	Tospy-turvy
अकुलाना	अकुलाना	Confuse	अटियाना	अकड़ना	To twist, to bully
अकलमुंडा	अनाथ	Orphan	अटेलहा	बुरा	Bad
अकेल्ला	अकेला	Alone	अठोरिया	आठ दिन	Eight Day's
अब	अब	Now	अभीकुन	अभी-अभी	Just Now
अभाग	दुर्भाग्य	Bad luck	अलहन	दुर्घटना	Accident
अंधरा	अंधा	Blind	अरपा	एक नदी	A name of river
अगरी	उँगली	Finger	अलहोरना	बीनना-चुनना	To select

अध्याय
7

छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास में समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, आकाशवाणी व सिनेमा की भूमिका (Role of Newspapers, Magazines, Aakashwani and Cinema in Development of Chhattisgarhi Language)

7.1 छत्तीसगढ़ी के विकास में समाचार-पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता की शुरुआत पेंड्रा (बिलासपुर) से 'छत्तीसगढ़ मित्र' से हुई जिसके संपादक माधवराव सप्रे थे। 1923 में चंद्रपुर (रायगढ़) से प्रकाशित 'छत्तीसगढ़' (संपादक मनोहर प्रसाद मिश्र), बिलासपुर के कुलदीप सहाय द्वारा संपादित 'विकास', 1935 में रायपुर से 'उत्थान' (सुंदरलाल त्रिपाठी) छत्तीसगढ़ी की आरंभिक ऐतिहासिक पत्रिकाएँ हैं।

छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य को स्थान देने वाली पत्रिकाओं में 'चिनगारी के फूल' (डॉ. विमल कुमार पाठक) 'विचार और समाचार' (विश्वनाथ वैशंपायन), 'छत्तीसगढ़ सहकारी संदेश', 'छत्तीसगढ़ सहकार' (दुर्ग), 'छत्तीसगढ़ सहयोग' (रायपुर), 'छत्तीसगढ़ गौरव' (रंजन लाल पाठक), 'धान का कटोरा' (डॉ. विनय कुमार पाठक) उल्लेखनीय हैं। सन् 1955 से रायपुर द्वारा मुक्तिदूत के संपादन में प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ी मासिक' से भी छत्तीसगढ़ी पत्रकारिता का सूत्रपात महत्त्वपूर्ण है। 'छत्तीसगढ़ी मासिक' ने छत्तीसगढ़ी गद्य व पद्य को प्रतिष्ठित किया तथा साहित्यकारों को मंच व प्रकाशन प्रदान किया। डॉ. विनय कुमार पाठक द्वारा विलासपुर में 'प्रयास प्रकाशन' की स्थापना एवं 'भोजली' के प्रकाशन से छत्तीसगढ़ी साहित्य को संबल एवं संवृद्धि प्राप्त हुई। 'भोजली' और 'प्रयास प्रकाशन' ने नागरी प्रचारिणी सभा की तरह अपनी सीमा में प्रचुर कार्य किया है। भोजली के बाद रायपुर से सुशील वर्मा के संपादन में प्रकाशित 'मयारुमाटी' छत्तीसगढ़ी मासिक का योगदान अन्यतम है। लोककला कुंज भिलाई द्वारा छत्तीसगढ़ी त्रैमासिक 'लोकमंजरी' (दुर्गा प्रसाद पारकर), 'छत्तीसलोक' एवं बिलासपुर से नंदकिशोर तिवारी द्वारा संपादित 'लोकाक्षर' (त्रैमासिक, जून 1998 से) एवं अंचल के छोटे-बड़े अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक दैनिक समाचार-पत्रों के माध्यम से छत्तीसगढ़ी पत्रकारिता के सृजन-विकास के पथ प्रशस्त हुए हैं।

छत्तीसगढ़ी में समीक्षात्मक शैली में सर्वश्री नारायणलाल परमार, विमल कुमार पाठक, हेमनाथ युद के छिटपुट लेख देखने को मिलते हैं किंतु समीक्षा के भंडार को भरने की दृष्टि से इस दिशा में सार्थक प्रयास नहीं हुआ था। डॉ. शोभना हरीश परसाई लिखती हैं, 'छत्तीसगढ़ी में समीक्षा की एकमात्र कृति छत्तीसगढ़ी की पत्र-पत्रिकाओं व शिष्ट साहित्य के संपादकीय, प्रकाशकीय, भूमिका तथा लेखकीय वक्तव्य के रूप में छत्तीसगढ़ी समीक्षा के बीज दिखाई देते हैं, लेकिन डॉ. विनय कुमार पाठक विरचित ग्रंथ 'छत्तीसगढ़ी साहित्य अउ साहित्यकार' ही एकमात्र प्रकाशित और क्रमशः सन् 1971, 75 और 78 के तीन संस्करणों में सज्जितचर्चित शताधिक पृष्ठों की प्रथम कृति है। पं. मुकुटधर पांडेय, द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र, गोविंद प्रसाद शर्मा, बाबूलाल शुक्ल प्रभृति विद्वानों ने इस कृति के महत्त्व को ऐतिहासिक कहा है। डॉ. पाठक का समीक्षा कर्म बहुआयामी है। उन्होंने इस कृति के माध्यम से जहाँ छत्तीसगढ़ी के अनेक अज्ञात और अल्पचर्चित रचनाकारों एवं समीक्षकों का जहाँ वृहत्तर साहित्य जगत से परिचय करवाया, वहीं दूसरी ओर छत्तीसगढ़ी साहित्य की विविध विधाओं, विशेषकर छत्तीसगढ़ी पद्य के विकास और इतिहास को सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के समानांतर विवेचित किया है।

छत्तीसगढ़ी की कुछ प्रमुख समाचार पत्र-पत्रिकाएँ

मड़ई (देशबंधु)

आज़ादी के बाद दूसरा दशक (1957-66) अनेक परिवर्तनों का गवाह बना। भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के क्रम में 1 नवंबर, 1956 को मध्य प्रदेश राज्य का गठन हुआ। सी.पी. एंड बरार की तुलना में मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल छोटा

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456